R.N.I.- UP-HIN/2001/3996
ISSN- 2581-6128

स्थापन दिवस के 23वें वर्ष में प्रवेश

संयम • संस्कार • सन्तुलन

शहर समता

(हिंदी साप्ताहिक)

www.shaharsamta.com

शोध पत्र

'कर्मक्षेत्र रणभूमि यही है, मानव हो तुम कर्म करो।
कर्म से कभी विमुख न रहना, मन में यह संकल्प करो।'-
उमेश श्रीवास्तव

संस्थापकः स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 श्रीमती साधना श्रीवास्तव
सम्पादकः उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक

वर्ष 23 | अंक 38 | रविवार, इलाहाबाद, 18 फरवरी 2024 | पृष्ठ 6 | विशेषांक मूल्यः 3 रू0

संपादकीय

महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक

नया मसीहा फिर आएगा ,
नव कविता की धार लिए।
तुम लिखते, वही सब बातें ,
पुष्प, अरुण, पराग लिए।
कहा, बहुत कुछ कहा गया है ,
अनुभूति की आश लिए।
इस विशेषांक में कई पुष्प है,
सब अपना अनुराग लिए।

तो बात महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक की हो रही है। नारी मन के दर्प की वह बातें - जो अपने-अपने अनुभव की कसौटी पर कसी गई हैं। इस विशेषांक में हर प्रकार की कविताओं का पुट मिलेगा, जहां भक्ति भावना मिलेगी, राम के प्रति अनुराग मिलेगा, वहीं जीवन की उबलते हुई सच्चाई का लेखा-जोखा भी दिखेगा। बानगी देखिए, कवियत्री रीना प्रदीप कुमार की -

चिड़िया थी उस आंगन की ,
जिस आंगन मुझको प्यार मिला ।
मां बाबा की आंखों का तारा ,
और भाई ने मुझको लाड़ दिया।
मैंने भी कुछ सपनों को ,
मां बाबा के साकार किया।

दूसरी बानगी, डॉक्टर अनीता पंडा की -

पिता है ना ,
ढोता बोझ जिम्मेदारियों का ।
है विषम परिस्थितियाँ ,
नहीं घबराता , ना हार मानता,
पिता है ना ।

इस तरह के विविध भाव से सराबोर इस महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक की कविताओं का अवलोकन करिए और बताइए कि अंक आपको कैसा लगा। इस बार की पुरस्कृत रचना वाराणसी की सुनीता जौहरी की है। कविता को पढ़िए, देखिए और समझिए।

अंत में -

जो कुछ बीत गया ,वह अच्छा है ,
जो कुछ चल रहा ,वह कच्चा है ।
वर्तमान में भोगा हुआ यथार्थ ,
मापेगा जीवन कितना सच्चा है ।

उमेश श्रीवास्तव

पुरस्कृत रचना

गीत

तुम सखा हो ,
तुम साक्ष्य हो
मैं आराधिका ,
तुम आराध्य हो ।।

तुम प्रेम अभिप्राय हो,
तुम जीवन संचार हो
मैं बिखरी आशा हूं,
तुम आशा आधार हो ।
तुम प्रेम पुंज हो ,
तुम प्रेम साकार हो
घोर अंधेरा उर अंतर में,
तुम विदीर्ण उजार हो ।।

प्रेम अनहद पारावार हो,
भावों का आकाश हो
अतल उदधि में पल्लवित,
नील नीलय वातास हो ।
तुम रवि हो, तुम शशि हो,
रोम-रोम आलोकित हो
संग सदा सदानीरा हूं मैं,
तुम सागर विस्तार हो ।।

स्वप्निल नैनो के वासी हो,
तुम प्रेम अविनाशी हो
कल्पांत ज्योति हो,
तुम काबा हो,
तुम काशी हो ।
जहां करती परिधि पार ,
वो आलौकिक संसार हो
हर भाव,
हर चाह हो शून्य जहां,
तुम प्रेम अपरम्पार हो ।।

सुनीता जौहरी
वाराणसी

कविताएं

सपने नए सजाएँ

नए साल की नई भोर में
सपने नए सजाएँ ।
अनचाहे बोझिल सपनों की
गठरी दूर हटाएँ ।

खट्टी -मीठी यादों के सँग
गायें नए तराने ।
जीवन में उल्लास भरें जो
ढूँढे नये खजाने ।
आँखों में आशा के जुगनू
हमको राह दिखाएँ
अनचाहे बोझिल सपनों की
गठरी दूर हटाएँ ।

मुरझाते जीवन की कोंपल
अपनेपन से सींचें ।
छूट रही हाथों से जिनकी
उनकी डोरी खींचें ।
अपनों से अपनों की दूरी
आकर पास मिटाएँ ।
अनचाहे बोझिल सपनों की
गठरी दूर हटाएँ ।

लालच के दलदल से निकलें
खुदगर्जी को छोड़ें।
पहचानें हम मक्कारों को
जाल झूठ का तोड़ें
मजबूरों की मजबूरी में
मानवता दिखलाएँ
अनचाहे बोझिल सपनों की
गठरी दूर हटाएँ ।
नए साल की नई भोर में
सपने नये सजाएँ ।।

मीरा भार्गव सुदर्शना
कटनी मध्यप्रदेश

जय श्री राम

अवधपुरी में धूम मची है ।
मन्दिर आली शान है।
बालरूप में राम विराजे
महिमा अपरम्पार है।
सरयू तट पर डुबकी लेकर ,
भक्त भक्ति से तरते आए ।
माथे तिलक लगाके आते ।
नित्य प्रार्थना करने आते ।
राम राम धुन सुनते हैं।
राम की लीला राम ही जानें ।
लीला अपरम्पार है।
अवधपुरी मे धूम मची है ।
मन्दिर आलीशान है।
नव विकास की राह देख लो ।
पृथ्वी पर जो ट्रेन चल रही ।
दशों दिशाओं से जुड़ी दिखेगी ।
नभ में एरोप्लेन उड़ेगे ।
अवधपुरी ले जायेंगे ।
बालरूप में राम विराजे
मन्दिर आलीशान है।
धर्म सनातन के शासन में ।
दीप जलाओ , खुशी मनाओ ।
भजन प्रभु का करते जाओ ।
अवधपुरी में राम विराजे
मन्दिर आलीशान है।
दरशन पूजन करो राम का ।
राम को शीष नवाओ मिल ।
राम नाम जग तारनहारा ।
कलियुग केवल नाम अधारा ।
राम राम गुन गाओ मिल ।
जय जय राम जय सिया राम ।
जय शीराम जय श्री राम ।

डॉ कुमकुम शुक्ला
जबलपुर मध्य प्रदेश

राम

ऋषियों के तप से तपी हुई।
है जन्मे इसमें वीर कई,
हो रहा है संत सम्मेलन।
यज्ञों का भव्य है आयोजन,
अब डरामड तुम्हें आना है ही होगा।
त्यागी के चरण गहो न गहो,
आचरण तुम्हें अब गहना है।
श्रावव्य साधना कल्याणी ज्ञानी
साधक का कहना है।
चाहे जितने प्रयास कर लो,
ईश्वर को खोज न पाओगे।
बिन त्याग, विराग सेप्रेम के तुम,
इंसान भी न बन पावोगे।

अनीता दुबे
जबलपुर

राम लला विराजे

राम की महिमा गाओ रे,
राम धुन गाते जाओ रे।

सूर्य वंश में उदित हुए,
मर्यादा पुरुषोत्तम राम।
राम की महिमा न्यारी रे,
राम नाम जपते जाओ रे।

नगरी अयोध्या भूमि पावन,
जन्मे थे श्री राम रे,
आकर इस माटी से माथे
तिलक लगाओ रे।
राम धुन गाते जाओ रे,

पिता वचन पालन करने,
वन को गए थे रघुराई रे,
सीता मैया की अग्नि परीक्षा
ले संस्कार बनाएं।
राम की महिमा न्यारी रे,
राम राम जपते जाओ रे।

रावण का अंहकार मिटाकर,
लंका भस्म कराएं रे,
शबरी के झूठे बेर चखें,
भेदभाव मिटाओ रे,
राम की महिमा न्यारी रे,
राम धुन गाते जाओ रे।

पत्थर को नारी बनाकर,
कर दिया उद्धार रे
केवट मल्लाह नांव चढ़,
सरयू पार गए श्री राम रे।
राम धुन गाते जाओ रे,
राम की महिमा न्यारी रे।

राम रमेति रमे रामे मनोरमा,
सहस्त्र नाम ततुल्य,
राम नाम वरानने में सर्व कल्याण

कविताएं

समाएं रे,

राम लला विराजे अयोध्या,
दर्शन को तुम आओ रे।

मंगल भवन अमंगल हारी,
श्री राम कहलाएं रे,
राम की महिमा गाओ रे,
राम धुन गाते जाओ रे।

जय श्री राम, सीता राम,
जय श्री राम गाओ रे,
राम की महिमा न्यारी रे,
राम राम जपते जाओ रे।।

आरती शर्मा
जबलपुर मध्यप्रदेश

मनहरण घनाक्षरी

प्रीति करो प्रीति मिले,
खुशी के सुमन खिले।
प्रेम उमंग खूब बढ़े,
आनंद अनंत है।

राम मय जग सारा,
भेदभाव ने है मारा।
लोभ-मोह सब कोई,
का आदि न अंत है।

सुख बाँटने से बढ़े,
मद का नशा न चढ़े।
दिखावा सकल जग ,
बस गजदंत है।

जो भी मिला हमें अभी,
मूढ़ ज्ञान है ये सभी।
परिश्रम का वो फल,
कर्मयोगी संत है।

उमा मिश्रा प्रीति
जबलपुर मध्य प्रदेश

गीत

आए हैं श्री राम,
इस जहान के लिए।
भारतीय संस्कृति के,
यशगान के लिए।।

माता पिता की सेवा और ,
गुरु का मान हो।
बंधु सखा और भार्या,
सबका सम्मान हो।
श्रीराम सा हृदय रहे
खानदान के लिए।
श्रीराम सा हृदय रहे
कल्याण के लिए।।
आए हैं.....

ऋषियों को किया निर्भय,
नित यज्ञ के लिए।
उर भावना सजे यही,
सुविज्ञ के लिए।
किया दैत्य दमन शांति के,
विधान के लिए।
किया दैत्य दमन ,
सूर्य कुल की आन के लिए।
आए....

निज धर्म पर अटल हो,पालन वचन करें।
सीमाएं नहीं लांघें ,मर्याद में रहें।
होना जरूरी राममय,इंसान के लिए।
होना जरूरी राममय, निज मान के लिए।
आए.....

श्रीराम के आने की, खुशियां गली गली।
घर द्वार सज रहे हैं, मानो है दिवाली।
हो विश्वगुरु भारत ,जहान के लिए।
हो विश्वशक्तिभारत, स्वाभिमान के लिए।

आए हैं श्री राम, इस जहान के लिए।
भारतीय संस्कृति के,यशगान के लिए।

श्रीमती अनुराधा गर्ग दीप्ति
जबलपुर म. प्र.

''राम मन्दिर आ गए '

अयोध्या नगरी के भाग्य अब जाग गए ।
राम मंदिर आ गए, देखो मंदिर आ गए।।

राम आ गए ,तो तिलक लगाऊंगी
दीप जलाकर मैं आरती उतारूंगी
मेरे जीवन के सारे दुख मिट जाएंगे राम
आ गए
राम आ गए देखो राम मन्दिर आ गए ।।

भक्तों ने जप - तप किए थे
कितनों ने बलिदान दिए थे
राम भक्तों की साधना रंग लाई
राम मन्दिर आ गए।।
राम मन्दिर आ गए
देखो राम मन्दिर आ गए।।

अयोध्या कब से सूनी पड़ी थी
राजनीति बीच में अड़ी थी
अब जगमग हो गई अयोध्या ,
राम मन्दिर आ गए।
राम आ गए ,
देखो राम मन्दिर आ गए ।।

राम कब से टेंट में बैठे थे
धूप सर्दी वर्षा को सहे थे
वर्षों की प्रतीक्षा पूरण हुई ,
राम मंदिर आ गए
राम आ गए ,
देखो राम मन्दिर आ गए।।

पूरी अयोध्या में खुशियां छाई है
जन - मन में उमंग भर लाई हैं
हिंदुओं का जागा स्वाभिमान ,
राम मंदिर आ गए।
राम आ गए ,
देखो राम मन्दिर आ गए।।

अयोध्या नगरी के भाग्य अब जाग गए।
राम मन्दिर आ गए,
देखो मन्दिर आ गए।।

आशा जाकड़

शालीनता

हाँ शालीनता ही तो है
औरतों का गहना,
जिसे पहन वो बन जाती है,
सब की चहेती लाडली ।
किन्तु कब तक ...!
आखिर कब तक....!
वो ही ओढ़ती रहेंगी
शालीनता की चादर..!
कब तक...!
आखिर कब तक ..?
अपने लिए बनाए गए सरहदों में
दम घुटते कैद होती रहेगी ,
समाज व अपनों की दुनियां में
कब तक...!
नही ..! अब मुझसे नही होगा..
फेक दूंगी मैं
शालीनता की ये चादर।
जिसकी कद्र ही नही दुनियाँ को ..
जिसने समझ बैठा है
शालीनता को ही मजबूरी ।
कितनी नासमझ है ये दुनिया।
ये जानती ही नही ....!
वनिता की शक्ति व ताकत को
वे नही जानती समझते ,
उसके शक्ति को.....!
नासमझ लोग कैसे जानेंगे
उसकी बौद्धिकता से
भरी तर्क की बाते...,
वो तो बस अपने सूक्ष्म स्तर पर
मर्यादा का उलंघन ही कहेंगे..,
और मानेंगे भी।
क्योंकि उन्हें नही समझ आती,
अपाला व घोषा की बौद्धिक बाते ।
उसे तो विरले .कालिदास ही समझ सकेंगे ।
इसलिए अब समय की मांग है
बदल डालो अपने वजूद को,
घुघट को शर्म का परदा नही,
अपितु सुरक्षा कवच के रूप में स्तमाल कर ,
अपनी कांच की चूड़ियों की
शक्ति को दिखाने का
अब यही है सही वक्त,
अपनी लज्जा भरी आंखों की पानी

सतरूपा मिश्रा

गीत

तुम सखा हो ,
तुम साक्ष्य हो
मैं आराधिका ,
तुम आराध्य हो ।।

तुम प्रेम अभिप्राय हो,
तुम जीवन संचार हो
मैं बिखरी आशा हूं,
तुम आशा आधार हो ।
तुम प्रेम पुंज हो ,
तुम प्रेम साकार हो
घोर अंधेरा उर अंतर में,
तुम विदीर्ण उजार हो ।।

प्रेम अनहद पारावार हो,
भावों का आकाश हो
अतल उदधि में पल्लवित,
नील नीलय वातास हो ।
तुम रवि हो, तुम शशि हो,
रोम-रोम आलोकित हो
संग सदा सदानीरा हूं मैं,
तुम सागर विस्तार हो ।।
स्वप्निल नैनो के वासी हो,
तुम प्रेम अविनाशी हो
कल्पांत ज्योति हो,
तुम काबा हो,
तुम काशी हो ।
जहां करती परिधि पार ,
वो आलौकिक संसार हो
हर भाव, हर चाह हो शून्य जहां,
तुम प्रेम अपरम्पार हो ।।

सुनीता जौहरी
वाराणसी

प्यार का तोहफा

पाया साथ तुम्हारा जबसे,
मंजिल मैंने पा ली है।
खुशियों का संसार मिला है,
चहूँ ओर खुशहाली है।।
रोम-रोम में सावन झूमे,
फागुन मुखड़े पे दमके।
माहुर,काजल रमे प्रीत में,
वेणी,गजरा भी महके।।
मेहंदी इठलाती डोले,
सिन्दूरी मांग मेरी
कहती किस्मत वाली है।
साँसों में सरगम बजती है,
पल भी ठहरा लगता है।
दिन हो गये सुनहरे
रात चांदनी वाली है।
गगन उजियारा लगता है।।
सांझ ढले
दीपों से रोशन मेरे घर में
जैसे नित दीवाली है।
बाट जोहते नहीं नयन अब,
ख्वाबों ने आना छोड़ा।
मखमल से आभास मिलन के,
तनहाई ने मुख मोड़ा।।
इन्द्रधनुषी रंग बिखरे हैं,
रुत की छटा निराली है।
खुशियों का संसार मिला है,
चहूँ ओर खुशहाली है।
ऐसा प्यार का तोहफा मिला मुझे
जबसे तुम मुझे मिले
अब जिंदगी मेरी इंद्रधनुष से
भरे रंगों वाली है।

अपराजिता शर्मा

पिया के घर जाना है

उबटन लगाकर रूप निखारो
मांग सजा दो कोई चंदन से
सजा दो कोई मुझे दुल्हन सी,
पिया के घर मोहे जाना है।
चुनरिया ओढ़ाओ कोई मुझे,
सितारे जड़ें हो हरि नाम की,
उस चुनरी के ही आड़ से,
दरस हरि का मुझे पाना है।
प्रीत की लाली होठों पर लगा दो,
नैनो में लगा दो काजल प्रेम का,
सुगंधित इत्र लगा दो श्रद्धा की,
मुझे पिया के हिया में समाना है।
अलता लगा दो पैरों में कोई ,
पायल बांधो कोई रीत की,
नाचू मैं धुन पायल के संग,
मुझे पिया को जो रिझाना है।
कंगन पहनाओ ऐसा कोई,
जिसकी खनक हो मतवाली,
बावरा बने मिलन को पियाजी ,
मुझे मेरे पिया को सताना है।
रंग दो मोहे पिया के रंग में,
भीगे मोरा पाप की चोली,
भर लूं मैं नाम की झोली,
इस घर से, उस घर को जाना है।
जल गुलाब में मिला के चंदन,
लिख दो अंग में नाम हरि का,
तुलसी दल का माला पहनाओ,
मुझे हरी चरण का शरण पाना है।

श्रीमती कुसुम जैन
कापसी कांकेर
छत्तीसगढ़।

धरा से चांद तक हिंदुस्तान

हिंदुस्तान ने रच दिया
दुनिया में नया इतिहास
चंद्रयान भेज कर इसरो ने
जीत लिया विश्वास

गौरवशाली अद्भुत पल जीवन में
आज आया
अंतरिक्ष पर पहुंच
ऐतिहासिक उपलब्धि पाया

चंद्रयान महज यंत्र नहीं
मुकम्मल हिंदुस्तान है
ज्ञान विज्ञान की बदौलत
भारत देश महान है
कल्पनाओं के जहान में
देखो विज्ञान पहुंच गया
चांद में पहुंचने वाला
भारत चौथा देश बन गया

अनुपम उपलब्धि से
खुशियों की घड़ी आई
सफल चंद्रयान अभियान की
सभी को बधाई

धरा से चांद तक हिंदुस्तान का
तिरंगा लहराया है
दक्षिणी ध्रुव पर पहले
पहुंचने का गौरव पाया है ।

सीमा निगम
रायपुर छत्तीसगढ़

ऐ री सखी मन मोर है
नाचे रितु बसंत अब आया है
रंग बिरंगे पुष्प खिले हैं
मन उमंग भर लाया है

कलियन कलियन भंवरे
घूमें गुल रस महक महकता है
डारी डारी पर आनंद भरा
जब कोई विहग चहकता है
गलियन गलियन प्रीत है
महके क्या मौसम बहकाया है
ऐ री सखी मन ....

पीली पीली सरसों पसरी
उजरा आँचल आज धरा का
बिखर गई है ओस की बूँदें
हरित रंग हुआ आज धरा का
सगरा जग मतवाला हुआ है
सबका मन हरसाया है
ऐ री सखी मन .....

हौले हौले पवन ये बोले
सर सर करके आज ये डोले
बासंती का रूप अनोखा
पट अंतस के आज ये खोले
पग पग साज बजे धरती पर
कौन सा राग सुनाया है
ऐ री सखी मन .....

स्मृति मिश्रा 'रीति'

सरस्वती वंदना

मां शारदे, मैं तुझे करूं प्रणाम,
रखना हम सबके, सिर पर हाथ।
तेरी कृपा के ,हम सब पात्र....,
लेखनी चलती रहे ,अविराम....।

श्वेत वस्त्र मां ,तुझ पे साजे...,
कर में, वीणा तेरे विराजे....।
हंस वाहिनी, मां तेरा नाम...,
तेरी महिमा ,अपरंपार....।
मां तू रखना सबका ध्यान...,
अपनी कृपा ,बरसाना अविराम।

मां शारदे मैं करूं प्रणाम.....

मां तू विद्या, बुद्धि दात्री...,
तू ही अज्ञानता को ,मिटाती...।
मेरे कंठों में, मिश्री घोल....,
मां विनती यही करूं, कर जोड़।

मां शारदे तुझे करूं प्रणाम.....

मां सरस्वती का है ,जयकारा...,
मां सबको तू, देती सहारा....।
तेरी कृपा से, कर रहे गान....,
शत-शत करूं मां ,तुझे प्रणाम।
मां तू रखियो ,सब की लाज..,
ये ही विनती है, मां आज....।

मां शारदे तुझे ,करूं प्रणाम...
रखना हम सबके, सिर पर हाथ।

रंजना बिनानी' काव्या'
गोलाघाट असम

मेरी मुस्कुराहट

सुन री सखी आज मैं क्यों मुस्कुराई ,
सुन री सखी आज मैं क्यों मुस्कुराई।
सुन री सखी हंसी मेरे लबों को छूकर मुझे
क्या क्या कहने आई।

वह कह गई मुझे की खूब मुस्कुराया कर।
तेरे चेहरे पर मुस्कान बहुत भाती है ।
तेरी आंखों की चमक एक नई रोशनी जागती
है।

तू जितना मुस्कुराती है उतनी ही दुनिया
और खूबसूरत नजर आती है। तेरी
सच्चाई,भी तेरी मासूमियत भरी मुस्कराहट
के साथ बहुत कुछ बयां कर जाती है ।
कि खुलकर जियो मस्त होकर जिओ। खुद
भी हंसो और औरों को भी जीना सिखाओ
जो भी तुझसे मिले वह भी
खुश होकर जीना सीख जाए ।

ऐसी खूबी हर किसी में कहा नजर आती
है। सुन री सखी मेरी मुस्कुराहट मुझे हर
रोज यह कह कर जाती है सुन री सखी मेरी
मुस्कुराहट मुझे
हर रोज यह कह कर जाती है।

डॉ पुष्पा सिंह
हैदराबाद

गीतिका

हमारे लिए जिंदगी से बड़े हो
सफर हो हमारा,
बामंजिल खड़े हो
कदम चूमना चाहते हैं तुम्हारे
सितारों में चंदा हो,
नजर में गड़े हो

नहीं जानती प्यार का फलसफा मैं
मुझे आजमाने को क्यों तुम अड़े हो

खयालों में भी सादगी ना निभाई
कभी प्यार करते, कभी तुम लडे हो

नहीं ले सकेगा कोई छीन कर भी
हमारे हृदय के मुकुट में जड़े हो

मेरी कोशिशें बेअसर हो रही है
कि लगता है जैसे चिकने घड़े हो

डॉ अर्चना पांडेय

'चिड़िया'

चिड़िया थी मैं
चिड़िया थी-चिड़िया थी
मैं चिड़िया थी-2
मैं चिड़िया थी उस आंगन की
जिस आंगन मुझको प्यार मिला
मां बाबा की आंखों का तारा
और भाई ने मुझको लाड दिया
मैंने भी कुछ सपनों को
मां बाबा के साकार किया
चिड़िया थी मैं चिड़िया थी-21

एक दिन काला कौवा आकर
जाल में मुझे फांस लिया को
कौवे ने आकर काला जादू
आंखों पर मेरी डाल दिया
मां बाबा के सपनों को फिर
मैंने भी दुत्कार दिया
वह उम्र सियानी ना थी मेरी
जिसमें मैंने यह विचार लिया
चिड़िया थी मैं चिड़िया थी -2

भैया की कलाई याद ना आए
जब दहलीज को अपनी पार किया
शैतान की आंखों में था धोखा
क्यों बिन सोचे विश्वास किया
कुछ दिन मुझसे प्यार किया
और प्यार के बदले को कोठा दिया
नए-नए का खिलौना बना कर
आत्मा पर मेरी वार किया
हाय ना समझी हाय न जानी
मां बाबा को अब याद किया
चिड़िया थी मैं चिड़िया थी-2

पुण्य आत्मा को यूं दुखाया
मुझे इसका ही श्राप मिला
अंधे योवन की खुशी में
जीवन भर का ताप मिला
मुझे जीवन भर का ताप मिला

मैं आज कहती हूं तुमसे
होते मां बाबा की आंखों में सपने
उन सपनों को ना तोड़ना
जिन हाथों ने पाला पोसा
उन हाथों को ना छोड़ना
उन आंखों में सच्चाई है
उन आंखों में है प्रेम भरा
किसी दूजे की खातिर
उन आंखों में
धूल कभी ना झोंकना
चिड़िया थी मैं चिड़िया थी
मैं चिड़िया थी मैं चिड़िया थी
उस आंगन की मै चिड़िया थी।

रीना प्रदीप कुमार
हैदराबाद

गणतंत्र दिवस

इस गणतंत्र दिवस को कैसे
मनाऊँ कर रही सोच बिचार
अपने ही ख्यालों से
मैं बोल उठी ये बातें हजार
गुजरे पलों से हम अपने
साथ क्या क्या लेकर आये

कविताएं

किसी का दिल जीता या
उसके दिल से उतर आये !
दिखावे का हितैसी बने
या अपना सच्चा धर्म निभाया
अन्न की थाली खींच ली
या उसे भर पेट भोजन खिलाया
शब्दों से अमृत पिलाया
या फिर पिलाया ज़हर
किसी की दुआएँ ली
या फिर ढाया कहर !
किसी का कुछ उजाड़ा
या बसने दिया बसेरा
किसी का भला किया
या करते रहे ये तेरा ये मेरा
किसी की चोट पर जख्म दिए
या लगाया मरहम
किसी के जीवन में खुशियाँ दी
या दिया बहुत सारा गम !
किसी के जीवन में रौशनी की
या कर आये अँधेरा
किसी को चतुराई से ठग लिया
या ईमानदारी का डाला डेरा
मेरी बातें सुन मेरे ख्याल कहने लगे
सुन तु रख अपना मन सच्चा
हर गणतंत्र दिवस के जैसे
ये भी गुजर जायेगा बहुत अच्छा !

सीमा सिंघी
गोलाघाट असम

मैं रहूं या न रहूं इस संसार मे

मैं रहूं या न रहुं
इस संसार में
मेरी पहचान
रह जाएगी !

फूलों मे खुशबू
रह जाएगी।
आसमां में
चांद -सितारे
जगमगायेंगे ।

मैं रहूं या न रहूं
इस संसार में
पंछी पेड़ो पर
मधुर गीत
गुनगुनायेगी ।
जंगल मे मोर
नृत्य कर मंगल
रुप ढायेंगे।
भोंरे फूलों पर
झुम झुम कर मधुर
संगीत सुनायेंगे ।
रात भी होगी
अंधकार भी होगा ।
नित्य सूर्य
उदय होगा
प्रकाश भी होंगें ।
प्रकृति में हरियाली
छाँयेंगे ईद दिवाली,दसहेरा
होली भी होगी।
शहनाई भी बजेगी
और डोली
भी उठेगी।

दादी -नानी की
कहानियां भी होंगे ।
मैं रहूं या न रहूं
इस संसार में
नदियां भी अपनी
धारा में
बहती रहेगी।
प्रकृति भी अनखी
रूप बदलती रहेगी ।
सावन की पहली
बारिस धरा
की प्यास बुझायेगी।
बसंत भी बहार
ले के आयेगी ।
पतझड़ भी होंगे ।
पत्ते झड़
जमीन पर मिल
जायेंगे,
तभी सिर्फ
मैं न रहुंगी
इस संसार में
लेकिन ,जग में
मेरी पहचान
रह जायगी।

सैयदा आनोवारा खातुन
विश्व नाथ (असम)

इसी बहाने

अपनों की खताओं को ,
हम हँस के टाल जाते हैं ।
इसी बहाने हम ,
रिश्ते निभा ले जाते हैं।
दिल पर लगी चोट को,
अपनों से छिपा जाते हैं।
इसी बहाने हम,
कहकहा लगा जाते हैं।
अपनों पे हुए दर्द को,
हम उनसे बाँट लेते हैं ।
इसी बहाने हम,
ग़म को कम कर जाते हैं।
खुशियाँ हो अपनों की ,
मिल जश्न मना लेते हैं।
इसी बहाने हम,
खुशियों को बढ़ा जाते हैं।।

दया शर्मा
शिलांग

संकल्प धरें

आइए नववर्ष में कुछ ऐसा करें
हटाके द्वेष-क्लेश मनसे परे
सर्वजन हितार्थ सब काम करें
अधुरे रह गए जो उसे पुरा करें
नव निर्माणका संकल्प धरें ।
बाल-वृद्ध,नारी हो या नर
सबको मिले अधिकार बराबर,
कोई न रहे अनपढ़ ,भूखा ,बेघर,
बेरोजगार न भटके दरदर,
आइए ऐसा कुछ जुगत करें
नव निर्माणका संकल्प धरें ।
बना रहे हर जगह भाईचारा,
अमन बना रहे देशमें हमारा,
सबसे प्यारा ,सबसे न्यारा
सुरक्षित रहे देश हमारा,
देशके हित की भावना धरें
नव निर्माणका संकल्प धरें ।
भारतने लहराया चाँदमें परचम,
अपने देशको मत आकिए कम,
कम नहीं है कतई गर नहीं भी हो उत्तम,
हमें ही बनाना है देशको सर्वोत्तम,
आइए मिलकर उद्यम करें,
नव निर्माणका संकल्प धरें।

गीता लिम्बू
शिलांग -6

रिश्ते अजीब हैं

अगर कोई बहुत खास हो,
दूर होके भी वो पास हो,
चाहे कितना भी नाराज़ हो,
उनके ख्यालों से उसको ऐतराज़ भी हो,
ये तो कुछ पलों की ही बात होती है,
जैसे कुछ ही घंटों की रात होती है।
एक जुस्तुजू सी उठती है
फिर रूह की गहराइयों से,
खफा खफा से दोनों इश्क की
लहरों में गोते खाते हैं,
सारे बहाने बिछड़ने के,
अपने आप बिछड़ जाते हैं।
दरमियानों के बावजूद,
एक दूसरे के हो जाने की
अकड़ पर आते हैं।
यूहीं नहीं कहते लोग,
बहुत मुश्किल से बनते
ऐसे अटूट नाते हैं।
कभी देखा जाता है कि,
वक्त बीत जाता है
उनमें कोई एक,
दूसरे को बेदर्दी से सताता है,
उनकी आड़ में माँ-बाप,
घर-बार, सब कुछ त्याग जाता है एक,
और दूसरा,
उसे फिर दरबदर भटकाता है।
इसलिए,
सच्चे दिल वाले लोग
मुश्किल से मिल पाते हैं,
जो किसी को एक बार अपनाते हैं,
तो उसे छोड़कर नहीं जाते हैं।

रीमा जोशी
शिलोंग, मेघालय

श्रम और वात्सल्य

पिता है न
ढोता बोझ जिम्मेदारियों का
है विषम परिस्थितियाँ
अर्थ प्राप्ति की चुनौतियाँ
नहीं घबराता, न हार मानता
पिता है न
रख कंधों पर ईंटें ढोता
साथ ही वह स्नेह लुटाता
ईटों की काँवर में बिठा कान्हा को
मुदित-मन पग बढ़ाता
पिता है न
खेल-खिलौना न दे सका
माखन-मिश्री न खिला सका
पर हृदय में है प्रेम-सागर
सदा अपने निकट रखता
पिता है न
देख पितृ-वात्सल्य भाव
जननी मन्द-मन्द मुस्कुराती
हो आनन्द-मग्न, ईंटें है उठाती
श्रमशीला, ममतामयी
मौन बलाएँ है लेती
माँ है न
ईटों की भट्टी से लेकर
घर तक साथ है निभाती
शास्त्र-निहित अर्धांगनी बन
साथ-साथ पग है धरती
माँ है न
माता-पिता है जीवित देव
आशीष संतान पर लुटाते
हो धनाढ्य या हो श्रमिक
स्नेह रसधारा हैं बरसाते
मात-पिता हैं न।

डॉ अनीता पंडा, अन्वी

किन्नर

बाँधा रिश्ता तुमने,
फिर वो कैसा रिश्ता था ?
पिंजरा तुम्हारा घर है,
वो घर कैसा घर था ?
ना नारी ना पुरुष हो तुम,
किस कोख ने तुम्हें जन्मा था ?
शर्म लिबास तोड़ कर,
साड़ी तुमने कैसे पहना था ?
बाप की लाज माँ का प्यार,
सबको तुम्हें ही बचाना था ।
छक्का या किन्नर हो,
ये बात किसी से ना बतलाना था ।
तोड़े मर्यादा की जंजीरें,
आज खुद को ढूँढ़ना था ।
बिन कोख की ममता की ताक़त,
सबको बतलाना था ।
इंसान हूँ ,
ये बात सीना ठोक के बताना था ।
क्या कमी है तुम लोगों में,
मेरी कामयाबी से बताना था ।
मैंने जिंदगी के मैदान से खुद को हमेशा उठाया,
उठ खड़ी हुई , धूलों पर प्यार लुटाया ।
कुछ ने इज़्ज़त दी , लूटा बहुतों ने ,
कुछ ने माँ पुकारा , निंदा की बहुतों ने ।
लड़ी मैं खुद के लिए समाज से,
क्या गलत कर दिया
मैंने की लोगों ने ली मज़े मेरे शरीर से।
लो आज लेती हूँ आखिरी साँस,
इस हक़ के मैदान में,
लिखती हूँ ये आखिरी लड़ाई,
अपने स्वाभिमान में ।
लेगी ये किन्नर जन्म वापस ,
लाखों रूप में ,
कभी अफ़सर कभी कलाकार ,
कभी उन्हीं गलियों में।
ना छोड़ूंगी ये जंग,
क्योंकि ये हक़ की आग है,
जो ना झेल पाया मुझे,
राख मेरी तैयार है ।
पोतूँ कालिख ख़ुद पर,
देखो वो काला रंग भी तुझसे साफ है,
झुकेगी नज़र सबकी,
आज एक किन्नर की बात है ।
आज धुतकारा दुनिया ने बस मेरे चाल चलन पे,
आएगा वो दिन जब तुम कहोगे,
मेरे घर एक किन्नर ने जन्म लिया था,
ये बात सम्मान से।

मेघा पी यादव
शिलॉन्ग

मेरे राम आ गए

आज भूपति दशरथ का
अजिर है भरा - भरा ,
तिस पर उल्लसित उपवन भी
पुष्पों से लदा लदा।

शहर समता - ब्यूरो प्रमुख

देहरादून ब्यूरो - निशा अतुल्य,
सतना ब्यूरो - डॉ ऊषा सक्सेना,
रीवां ब्यूरो - साधना तिवारी,
लखनऊ ब्यूरो - मंजु सक्सेना,
जबलपुर ब्यूरो - शैली सेठ,
लुधियाना ब्यूरो - श्रद्धा शुक्ला,
जौनपुर ब्यूरो - डॉ मधु पाठक,
हैदराबाद ब्यूरो -रीना प्रदीप कुमार,
भिलाई ब्यूरो - संध्या चंदेल,
गोरखपुर ब्यूरो - चित्रा श्रीवास्तव,
दिल्ली ब्यूरो - अफरोज़ अजीज,
तिनसुकिया गोलाघाट ब्यूरो - रंजना बिनानी,
प्रयागराज ब्यूरो - डॉ आकांक्षा पाल,
भीलवाड़ा ब्यूरो - डॉ राजमति पोखरना,
इंदौर ब्यूरो - आशा जाकड़,
शिलांग ब्यूरो - डॉ अनीता पंडा,
बिलासपुर ब्यूरो - स्मृति मिश्रा 'रीति,
रायपुर ब्यूरो - सीमा निगम,
कानपुर ब्यूरो - सीमा वर्णिका,
भोपाल ब्यूरो - दीपमाला तिवारी,
दमोह ब्यूरो- भावना शिवहरे,
मण्डला ब्यूरो - डॉ अर्चना जैन
बनारस ब्यूरो - सुनीता जौहरी,
आरा ब्यूरो - सिम्पल सिंह,
बिजनौर ब्यूरो - ऋतुबाला रस्तोगी,
पठानकोट ब्यूरो - क्षमा लाल गुप्ता,
सप्तरी नेपाल ब्यूरो - करुणा झा,
धमतरी ब्यूरो - कामिनी कौशिक,
रामपुर ब्यूरो - चंद्रिका कुमार 'चांदनी',,
मुरादाबाद ब्यूरो - अभिव्यक्ति सिन्हा,
कटनी ब्यूरो - मीरा भार्गव,
पटना ब्यूरो - अंजू भारती

शहर समता (हिन्दी साप्ताहिक) के वार्षिक एवं तीन वर्षीय सदस्य बनें।

वार्षिक सदस्यता के लिए -200/- **तीन वर्षीय सदस्यता के लिए -500/-**

कृपया 'शहर समता' के नाम से चेक या आनलाइन भेज सकते है।
IFSC Code- PUNB0100120 A/c.-1001050011592

व्यवस्थापक
शहर समता (हिन्दी साप्ताहिक)
289/238 ए (अनंत भवन) कर्नलगंज ,इलाहाबाद-211002

पीडीफ़ के लिए
shaharsamta.blogspot.com
पर जाएँ ।

संस्थापक
स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 साधना श्रीवास्तव

सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
आरएनआई नं0 UPHIN/2001/3996

उप संपादक
डा0 अरूण कुमार मिश्रा
रचना सक्सेना

Mo. 9005239332 Email-shaharsamta@gmail.com

स्वत्वाधिकारी/मुद्रक/प्रकाशक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा इण्डियन प्रेस (पलि.) प्रा0लि0, 36 पन्ना लाल रोड, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए, (अनन्त भवन) कर्नलगंज, इलाहाबाद से प्रकाशित।

इस अंक के प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा समस्त विवादों का निपटारा इलाहाबाद न्यायालय में ही होगा।

कविताएं

चहुं ओर हवन ,
भजन और यज्ञ हो रहे ,
घर घर सब मिल खुशी के
गीत से गूंज रहे ।
संपूर्ण अयोध्या नगरी व्यस्त है
पूजा - अर्चन में ,
मेरे प्रभु श्रीराम के आने की
खुशी हर जन-मन में
अधरों पर मुस्कान लिए
शिशु के पंचम वर्ष,
अवध निवासी हैं
मुदित देख पूजन- उत्सव रंग ।
चारों ओर सुसज्जा हो रही
मानों पुष्पित फुलवारी,
सब ओर से आमंत्रित
पहुंचे मित्र, देव , ऋषिगण।
स्वर्ग-सा सुन्दर आज सजा
साकेत का हर कोना ,
हृदय प्रफुल्लित हो रहा
संपूर्ण जन जन का ।
मानवता असीम थी ,
जनहित थे सब काम,
दानवता को दूर कर,
बसे हर हृदय में श्रीराम ।
अमृतमय यह मंगलबेला ,
उत्सव भव्य मनायें हम,
दिव्य अवध की जन्मभूमि पर ,
पुनर्प्रतिष्ठित होवें राम ।
दीप खुशियों के जलें
मेरे प्रभु श्रीराम आ गए ,
दसरथ आंगन बधाई-गूंज
चहुंओर गुंजित हो रहे।
ये शुभ अवसर युगों युगों में
कभी कभी आते हैं ,
चलो श्रीराम मंदिर में
प्राण प्रतिष्ठा कर खुशी मनाते हैं ।

सरिता कपूर

कैसे ये साल निकल गया

कब आया कब ढल गया,
पता ही न चला कैसे ये साल निकल गया,
क्या खोया,
क्या पाया,
क्या समेटा,
क्या गंवाया,
कुछ वादे किए,
कुछ इरादे किए,
कुछ अधूरे रहे,
कुछ पूरे किए,
मौसम की तरह ये कैसे बदल गया,
पता ही न चला कैसे ये साल निकल गया।।
कुछ लोग मिले,
कुछ बिछड़ गए,
कहीं मंजिल पा ली,
कहीं पिछड़ गए,
मुट्ठी में रेत की तरह,
कैसे फिसल गया,
पता ही न चला कैसे ये साल निकल गया।।
देखे थे सपने, कुछ ख्वाब संजोए,
पूरे हुए तो हंस दिए,
नहीं हुए तो रोए,
कभी दिल मुरझाया,
कभी मचल गया,
पता ही न चला कैसे ये साल निकल गया।।
कई रिश्तों ने मुंह मोड़ा,
कईं अजनबियों से रिश्ता जोड़ा,
कुछ अपनों ने ठुकराया,
कुछ गैरों ने अपनाया,
पल-पल करके,
कैसे हर पल गया,
पता ही न चला कैसे ये साल निकल गया।
आई थी कईं बाधाएं,
रूठी थी कुछ हवाएं,
थके, हारे, टूटे कई दफा,
हौंसला न टूटा बढ़ता रहा,
तूफानों का ये वक्त आखरि बदल गया,
पता ही न चला कैसे ये साल निकल गया।।
रंजीशे पाली किसी ने,
किसी ने हमदर्दी की,
तंज भी सहते गए,
हंसते रहे, उफ्फ नहीं की,
कभी गले में अमृत, कभी गरल गया,
पता ही न चला कैसे ये साल निकल गया।।

नीता शर्मा
शिलोंग, मेघालय

राम राम जय, राम राम जय

राम राम जय, राम राम जय,
राम राम जय राम
राम काज कीन्हें बिना,
कबहूं न करो विश्राम
राम राम जय राम .....
जन-जन गावे,
मुनि मन ध्यावे,
सांझ-सकारे राम
कलिमल जारे, हृदय पखारे,
पावन राम का नाम
राम राम जय राम .....
मंगल करनी, अद्भुत रहनी,
मधुरम बैनि राम
सिय संग सोहे, मन को मोहे,
दोनों पूरनकाम
राम राम जय राम .....
घट-घट बोले, हिय में डोले,
जैसे राधे श्याम
शिव के प्यारे, प्राण अधारे,
हनुमंत के राम
राम राम जय राम .....
बजे बधईया, ता ता थैया,
नाचे सारे धाम
गाये पुरवइया,
राम-रमैया आए अयोध्या धाम
राम राम जय राम.....
दीप जलाओ, मंगल गाओ,
तज के सारे काम
सरयू तीरे, जगमग चमके,
सदा राम का नाम
राम राम जय राम .....

डॉ. रश्मि झा

जिंदगी के ग़म को भूलाने चले हैं

जिंदगी के ग़म को भूलाने चले हैं
कि ऐ जिंदगी देख!
अब हम मुस्कुराने चलें है।
गज़ब का तमाशा है गज़ब की भीड़ है
आसपास
इन भीड़ो से खुद को बचाने चलें है !
कि ऐ जिंदगी देख !
हम मुस्कुराने चले हैं।
न भीग जाऊं कही
इस बार की ज़हरीली बारिश में
देख अब अपनी इल्मों की
छाता बनाने चलें है।
कि ऐ जिंदगी देख ! हम मुस्कुराने चलें हैं।
होड़ है हर तरफ लगी इस बात की यारों
कि अब सब अपने-अपने
तराने सुनाने चले है !
की ऐ जिंदगी देख !हम मुस्कुराने चले हैं।
हर कोई है रंगा जमाने की रंग में
बस किसी तरह हम
अपनी ज़मीर को बचाने चलें हैं।
कि ऐ जिंदगी देख ! हम मुस्कुराने चलें हैं।
हो जाऊं न शामिल इन मे मै भी
बडी मुश्किल से खूद को समझाने चलें है।
ज़हर घूल गया है हवाओं में इस कदर
की इन सांसो में अब भी
असर आने चलें है।
जिंदगी के ग़म को भूलाने चलें है
कि ऐ जिंदगी! देख! हम मुस्कुराने चले है !

सविता कर्ण

मुझे बड़ा अच्छा लगता है

जब कहीं भावनाओं का समुंदर
देखने को मिलता है ।
जिसमें कुछ मीठे एहसास तैरते हों
कुछ जज़्बात लहरों से जाकर मिलते हों
विचारों की धारा जब कभी मचलती हो
बाहर आने को वो पल -पल तड़पती हो
डमुझे बड़ा अच्छा लगता है.....
उसका मन ही उसे बाहर
आने ना दे
प्रलय की आशंका से डरा कर
उसे एक हद्द में बाँधा दे
तब अपनों के प्रति लगाव उसका
देखते ही बनता है
कितना मासूम और समर्पित है वो अपनें
रिश्तों के प्रति
इससे ये पता चलता है
डमुझे बड़ा अच्छा लगता हैड ....
उनका ये भाव देखना
मुझे बड़ा अच्छा लगता है
प्रेम की समर्पण भाव
मुझे अच्छा लगता है
रिश्तों की ये मासूमियत
मुझे बड़ा सच्चा लगता है ....

अर्चना झा अन्नू
दिल्ली

अहबाब की नज़र

मैं तेरी आँखों मे रहकर हिजाब हो जाऊं।
तू हर्फ़ हर्फ़ पढ़े मुझे वो किताब हो जाऊं।।

मेरे सिवा तुझे कोई चाहे ना कभी।
ऐसा मैं तेरा इन्तेख़ाब हो जाऊं।।

तू आसमां की बुलन्दी पे लेके चल मुझे।
मैं तुझ पे जान निसार करूँ आफताब हो जाऊं।।

तू अपनी शोख निगाहों से छू ले मुझे।
महक महक जाऊं गुलाब हो जाऊं।।
तेरे बगैर तो जीना मुहाल है ए अज़ीज़
मुझे जितना भी होना है लाजवाब हो जाऊं।।

अफरोज अजीज
दिल्ली

केश

जब अचानक उठकर वक्त बेवक्त
अपने बिखरे अस्त-व्यस्त केश समेट
कोई स्त्री उनकी गांठ बांधती है....

तब वह उनमें सिर्फ गांठ नहीं
अपने हौसलों को बांधती है
अपनी जिम्मेदारियां को निभाने हेतु
पुनः अपनी क्षमताओं को समेटती है
उसके केश के गांठ उसकी कर्मठता को
दर्शाते हैं..!

उसके इस गांठ में लगे पुष्प
उसके बहके प्रेमी का मन महका देते हैं
उसके गांठ में टांके घुंघरू
उसकी चंचलता को दर्शाते हैं
जितनी वह कर्मठ है, उतनी वह चंचल
भी है!

उसके जूड़े का हर फेरा , हर चक्र
मानो एक चक्रव्यूह सा है
जिसके भीतर छिपा हो जैसे
एक अभेद्य अदृश्य लक्ष्य, जिसे भेद पाना
एक आम व्यक्ति के
बूते के बाहर की बात है!

उसके जूड़े का कसाव,
उसकी गांठ..
उसकी दृढ़ता को दर्शाता है
कोई भी स्त्री कितनी भी...
कोमल क्यों ना हो,
कितनी भी कामिनी क्यों ना हो,
पर होती वह समृद्धि ही है...
होती वह दृढ़ ही है....!

मंजुलिका भारती
दिल्ली

ग़ज़ल

1) कभी दिल बर की सूरत और सीरत और
होती है
मोहब्बत में वफाकरने कि कीमत
और होती है

2) तड़पता हूं कभी नजरे उठा कर
वो मुझे देखे
झुकी नजरों से उल्फत की नज़ाकत
और होती हैं

3) मुझे सब जानते मेरे सलीकों से
मगर समझो
जुड़ा हो नाम जब उनका वो तोहमत
और होती है

4) बड़े मासूम लगते हैं मुहब्बत में
गिले शिकवे
वफा पर आंच आए वो शिकायत
और होती है

5) भरी होती है हर महफ़िल फरेबी
इश्कबाजो से
हर एक आशिक पे दिल आए वो फितरत
और होती है

6) कभी होता है कुछ ऐसा के दो दिल
एक हो जाएं
निभा जाए अकेले वो मोहब्बत
और होती है

शिवानी चंद्रा

नया सा सवेरा

नए साल का है नया सा सवेरा।
न होगा अँधेरा कभी अब घनेरा।।

नई सी उमीदें नई सी उमंगें।
दिलों में उठी हैं हज़ारों तरंगें।
नई सी खिली धूप बादल हटाकर।
उड़ी आसमां में नई सी पतंगें।
खुशी का रहे अब सदा ही बसेरा।
नए साल का है नया सा सवेरा ।

सुनो दे रहे हैं सभी अब बधाई।
कई ख़्वाहिशें हैं दिलों में समाई।
भुला दो पुरानी अदावत सभी अब।
हमेशा रखो याद सबकी भलाई।
न कोई मिले अब अमन का लुटेरा।
नए साल का है नया सा सवेरा।।

न भूखा दिखे अब फटेहाल कोई।
रहे आस सबके दिलों में सँजोई।
वचन एक दो तुम नए साल मुझको।
सदा हर्ष में ही रहे सृष्टि खोई।
बनो तुम सभी की खुशी का चितेरा।
नए साल का है नया सा सवेरा।।

अनीता सिंह 'अनु'

क्यूँ आज तुमने नैनों को

क्यूँ आज तुमने नैनों को ,
सागर बनाया है।
क्या कोई बीता अजूबा
याद आया है।

यूँ नहीं देखो फलक को
कोई नहीं अब आएगा
जोहती तुम बाट किसकी,
बीत सावन जाएगा।
राज वो पहचानना जो,
दिल में समाया है।.....
क्या कोई बीता अजूबा
याद आया है।.....

भा गई थी एक अदा,
सतरंगिनी अठखेलियाँ।
तोड़करके बंधनों को
झूमती परछाइयाँ।
याद कर सारे तराने
जिन्होंने मन लुभाया है...
क्या कोई बीता अजूबा
याद आया है।.....

प्रवीणा त्रिवेदी 'प्रज्ञा'
नई दिल्ली 74

छवि राम की

छवि राम की भर नज़र देखते हैं,
परम ईश प्रियवर जिधर देखते हैं,

जनक नंदिनी की मधुर छवि निराली,
सिया राम मय जग बशर देखते हैं,

नगर के निवासी मनाते दिवाली,
वो अदभुत मनोरम शहर देखते हैं,

विराजें भवन में सिया राम लक्षिमन,
हृदय में ही आठों पहर देखते हैं,

है मंजुल मनोहर छवि राम सीता,
उठे देख दिल में लहर देखते हैं,

जगे भाव पावन मधुर भक्ति मन में,
धरा पर अलौकिक बहर देखते हैं,

अयोध्या की नगरी है दुलहन सरीखी,
'मनोरम' सजे गाँव घर देखते हैं,

मनोरमा श्रीवास्तव 'मनोरम'

भजन

देखकर अपनी नगरी प्रभू राम जी,
थे जहाँ पर खड़े वो खड़े रह गये।
सज गयी है अयोध्या दुल्हन सी जो,
देखने जब गये देखते रह गये ।।

राम को देख सरयू मचलने लगी,
घाट रोने लगे और बिलखने लगे ।
प्रेम में डूबी सारी अयोध्या दिखी,
उसमे डूबे प्रभू डूबते रह गये ।
देखकर अपनी नगरी प्रभू राम जी,
थे जहाँ पर खड़े वो खड़े रह गये।।

राम के नाम की गूंजती एक लहर,
और दर्शन को प्यासे दिखे भक्त गण।
नैनो से बहती जलधारा एसी दिखी,
राम भीगे तो फिर भीगते रह गये ।
देखकर अपनी नगरी प्रभू राम जी,
थे जहाँ पर खड़े वो खड़े रह गये।।

जब गये देखने अपनी ही प्रतिमा को,
हो रही थी प्रतिष्ठा जहाँ प्राणो की।
आँख नम यूँ हुई जा समाए प्रभू,
लौट पाए नही वो रुके रह गये।
देखकर अपनी नगरी प्रभू राम जी,
थे जहाँ पर खड़े वो खड़े रह गये।।

रचना सक्सेना

गीत पुरषोत्तम राम

शुभागमन है सिया राम का,
अवध पुरी के धाम ।
पूर्ण प्रतिक्षा हुई हमारी,
मिला नैन विश्राम ।।
हृदय हमारा डोल रहा है,
मुख करता गुणगान ।
राम हमारे भाग्य विधाता,
पूजे सकल जहान ।।
नेह धरा बरसाते रघुवर,
खेते हैं पतवार ।
स्वागत है कौशल्या नंदन,
भक्त खड़े सब द्वार ।।
रघुनंदन की छाया में तो,
होते पूरे काम ।।
पूर्ण प्रतिक्षा हुई हमारी,
मलिा नैन विश्राम ।।

पुलकित है सरयू की धारा,
गीत सुनाती आज ।
कल-कल छल-छल निर्मल बहती,
हृदय हुआ परवाज़ ।।
भगवा रँग में रंगी अयोध्या,
रज-रज हुआ निहाल ।
दशरथ नंदन राम दुलारे,
तुम्ही जगत की ढाल ।।
जब भी फंसे भंवर में प्रभु हम,
लिया तुम्हारा नाम ।
पूर्ण प्रतिक्षा हुई हमारी,
मिला नैन विश्राम ।।

धर्म परायण पाठ पढ़ाया,
किया धर्म विस्तार ।
दीन हीन को गले लगाया,
किया सदा सत्कार ।।
सरल सौम्य व्यक्तित्व तुम्हारा,
लिया मनुज अवतार ।
मातु जानकी के अति प्यारे,
विनय करो स्वीकार ।।
शीश नवाते भक्त तुम्हारे,
जय पुरषोत्तम राम ।
पूर्ण प्रतिक्षा हुई हमारी,
मिला नैन विश्राम ।।

शुभागमन है सिया राम का,
अवध पुरी के धाम ।
पूर्ण प्रतिक्षा हुई हमारी,
मिला नैन विश्राम ।।

प्रियंका त्रिपाठी पांडेय
प्रयागराज

मेरे रघुवर राम जी

मेरे रघुवर राम जी, अब आएँगे निज धाम।
जन्मभूमि की गोद में, करेंगे प्रभु विश्राम ।।

रघुकुल राजा दशरथ भी, स्वर्ग से देखें
आज।
हर्षित रोमावली हुई , देख अवध का साज।।

सीता मैया लखन सहित, शोभित होंगे राम।
पुण्य अयोध्या धाम पर, पूर्ण करेंगे काम।।

चरणधूलि धर माथ पर, कृपा राम की पाऊँ।
मेरे प्रभु होगें प्रसन्न,
चलो मिलकर दीप जलाऊँ।।

निर्धन दुर्बल कोई भी,
अब नहीं सताया जाए।
यही सोच मेरे राम जी,
निज जन्मभूमि पर आएँ।।

रघुवर जैसा कोई नहीं,
माँ सीता सम है कौन ?
मंत्र - मुग्ध सब भक्त हैं,
सभी करें मनोरथ मौन।।

जनकदुलारी कुलवधू ,
अब सोलह कर श्रृंगार।
आएँगी प्रभु संग यहाँ,
धारेंगी निज कुल भार।।

अतिपावन नगरी हुई,
हैं करते सभी प्रणाम ।
श्री अयोध्या धाम में,
दर्शन देंगे अभिराम।।

वाल्मीकि गुरुदेव के,
पद पंकज पर रख माथ।
यज्ञ कर रहें ऋषि मुनि,
देवगणों के साथ।।

एक मनोरथ बस प्रभु,
अब लीजे 'शशि' निहार।
शेष ये जीवन जो बचा,
तव चरणों में दूँ वार।।

डॉ0 (कु0) शशि जायसवाल
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

मर्यादित राम - एक संदेश

स्वागत है श्री राम तुम्हारा !
प्रभु जब तुम अवतरित हुए
रावण राक्षस का वध करना था ।
आज 500 वर्षो बाद तुम्हारा पुनः
अवतरण होना
अत्यधिक प्रासंगिक हो जाता है ।
वह भी एसे समय मे
जब युवा पीड़ी मर्यादा खो रही है
पारिवारिक मूल्यों,
धर्म व ईश्वर मे
आस्था खत्म हो रही है ।
प्रभु तुम्हारी पुनः प्राण प्रतिष्ठा से
आज सम्पूर्ण समाज/देश/ विश्व/जनमानस
राम मय हो रहा है ।
दूरदर्शन, साहित्य,
सामाजिक गतिविधियों मे प्रेषित
राम काथाए, भजन, गीत,

कविताएं

संगीत, नृत्य आदि
राम के मर्यादित,
करुण व सुंदर
आचरण को
प्रसारित व प्रचरित कर रहे है ,
सारा जन मानस देख और समझ रहा
है - राम को
उनके ईश्वरीय स्वरूप को ।
राम का पुनः अवतरण
हमारे अन्तःकरण के रावण को
दहन करने की सामर्थ्य रखता है ।
राम तुम्हें नए रूप मे आना ही था
नई पीड़ी के मार्ग दर्शन के लिए,
हम सबकी चेतना और आनंद के लिए ।
हे राम !
तुम शब्द नहीं ,
तुम व्यक्ति नहीं
तुम पूर्णकाम परमेश्वर हो ।
आत्मा की अनंत यात्रा मे
प्रभु साथ रहो
भव पार करो ।
हे राम बसो तुम कण कण मे
हे राम राम बसो तुम जन जन मे ।

डा कल्पना श्रीवास्तव

माँ सरस्वती

माँ सरस्वती की वंदना करता है
जन जन का मन.
बुद्धि विवेक का ज्ञान पाता है
जब करता है माँ सरस्वती को नमन!
आ गया है फिर बसंत
माँ सरस्वती जी को हम सभी करें
पूरी श्रद्धा से नमन,
माँ सरस्वती की कृपा से ही
मनुष्य पकड़ता है अच्छी डगर,
माँ सरस्वती ही देतीं हैं इतना ज्ञान
की व्यर्थ की बातों पर
मनुष्य नहीं देता ध्यान.
अच्छी शिक्षा की ओर लगाता है मन
सफलता की ओर बढ़ता है मनुष्य
माँ सरस्वती की वंदना करता है
हर भारतवासी का मन ।

मोहिनी कुमारी

राम जन्म

हुए सुत चार दशरथ के
घड़ी शुभ आज है आई।
लिया अवतार प्रभु ने
जब अयोध्या में खुशी छाई ।

विधाता जन्म लेते ही करे
अद्भुत यहाँ लीला।
चतुर्भुज रूप में माँ को
दिखा ब्रम्हांड था नीला।

कहे माता तजो यह रूप
खेलो गोद में आकर।
सुखद अनुभव करूँगी
तब तुम्हें मैं गोद में पाकर।

हुई खुश मात कौशल्या अवध में
धूम छाई है।
कठिन तप से हुए
सुत चार बजती अब बधाई है।

अलौकिक रूप जब धारा दिखाया है
जगत सारा।
कहे कर जोड़ कर
माता बनो तुम आँख का तारा।

अलौकिक रूप जब देखा
हुई विस्मित तभी माता।
बनो अब लाल तुम
मेरे यही तुमसे जुड़े नाता।

खिलाऊँ गोद में तुमको करूँ
अनुनय विनय प्यारे।
रुदन करने लगे प्रभु जी
कि बालक रूप जब धारे ।

सिम्पल काव्यधारा
प्रयागराज

गज़ल

तू देगा ग़म किसे ऐ आसमां
जब इस जहां में हम नहीं होंगे।
गुज़र गईं मुद्दतें वस्ल- ए-सनम
की इन्तिज़ारी में।
वो आयेंगे बहार-ए - फ़स्ल में
जब बाग़ में हम ही नहीं होंगे।
कभी सुननी न चाही थी
किसी ने दास्तां मेरी
सुनोगे तो सही,जब कहने वाले
हम नहीं होंगे
नज़र में मैं सभी की गिर गई
तो इसका ग़म क्यों हो
बिठा लोगे पलक पर गर
तो क्या ग़म कम नहीं होंगे
बनूँ खुश्बू ,चमन महका सकूँ
ये आरज़ू मेरी
कभी खिल जाऊँगी मैं भी
मगर मौसम नहीं होंगे।

डॉ सुषमा त्रिपाठी

राम

आज पवन उल्लासित है
चहुं ओर फैली है खुशी
धरती के कण-कण में छाई है आरुषि
सरयू में आया है वर्षों बाद उफान
आ रहे हैं रहने अवध में
सबके पालक श्री राम
वर्षों का वनवास कहीं अब पूरित होगा
सदयुग का परिदृश्य पुनःअब जीवित होगा
भक्त और भगवान का अद्भुत संगम होगा
प्रस्तर मानवता का अहिल्या तारण होगा
ऋषि मुनि ज्ञानी-ध्यानी संत समागम होगा
रामलला के दर्शन का स्वर्णिम अवसर होगा
मायावी अवरोध का परास्त दशानन होगा
रघुवंशी अजेय सत्य पुनः स्थापित होगा
वर्षों से सूना परिसर,
फिर से जाग्रत होगा
राघव के स्वागत में पुनः दीपोत्सव मनेगा
कलयुग में त्रेता का सुंदर स्वप्न सजेगा
धर्म न्याय की जीत का घर-घर पर्व मनेगा
देवनगरी अयोध्या का दृश्य मनोहर होगा
जब दशरथनंदन ,
सत्य सनातन का जयघोष उठेगा।

संध्या शुक्ला

श्रीराम की बाल लीला!

जग के स्वामी अंतर्यामी श्रीराम,
सुमिरन करते सब तेरा ही नाम।
अवतार लिए अवध में तो,
मातु-पिता हुलस पड़े।
अवध के वासी खुश होकर,
कौशल्या के सब द्वार खड़े।।
आज जागे हैं भाग्य हमारे,
कौशल्या मन में मुस्काएँ।
पुलकित होती माँ कौशल्या,
देख श्रीराम की बाल लीलाएँ!
गोद उठा खिलाएँ लाल को,
और वात्सल्य प्रेम में खुश होतीं।
कभी पालना झुला कभी गोद उठा,
नजर भर-भर लला को निहारतीं।।
पैरों में पैजनिया पहने और बजे,
ठुमक-ठुमक चले लाल तो खुश होतीं।
घुंघराले काले -काले केश देखकर,
अपने लाल की खूब बलइयाँ लेतीं?
नजर लगे न किसी की, मेरे लाल को,
आकर माथे काला टीका लगातीं।
देखकर नटखट, शैतानी लाल की,
कौशल्या पल-पल बलिहारी जातीं!!

सुषमा सिंह उर्मि,,

नया वर्ष

देते हैं दिल से आपको नववर्ष की
शुभकामनाएं,
आने वाले बरस में हो रास्ते सरल,
मंजिल खुद ब खुद आपके कदम चूम जाए ।
साल का यह पहला महीना, चारों तरफ
खुशियां ही खुशियां नजर आए,
विराज रहे हमारे प्रभु राम, अयोध्या में,
आओ एक बार फिर सब मिलकर,
दीपावली मनाएं ।
है प्रभु से यही प्रार्थना,
ना किसी को कोई दुख हो,
ना किसी के पलकों से,
अश्क गिर पाएं ।
रह गई हो कोई तमन्ना अधूरी,
इस वर्ष में पूरी हो जाए,
हो सभी की मनोकामनाएं पूर्ण,
पटल पर स्थित सभी बहनों के लिए,
मेरे दिल में यही है भावनाएं ।

पुष्पा सिंह

मनहरण घनाक्षरी छंद

सांवरो सा देख रूप, छटा भी बड़ी अनूप,
सीता जी के मन को भी,राम जी यूं भाए हैं।

धनुष उठाया हाथ,गुरु जी का लिया साथ,
तोड़ के धनुष राम,सीता वर लाए हैं।

अवध पुरी में आज,बजे है मधुर साज,
राजा दशरथ भी तो, फूले न समाए हैं।

जनक दुलारी सिया, जनम धरा ने दिया,
कोमल कुसुम जैसी ,कुल वधू पाए हैं।

शिप्रा ज्ञानेंद्र सिंह

नया वर्ष

बड़े अच्छे लगते हैं क्या नया साल
ये बातें , ये मुलाकातें , ये वादें और
सुनहरा कल
बड़े अच्छे लगते हैं.....

नईं यादें जुड़ेंगी और इसमें ,
जीवन यूं ही चलेगा
सच पूछो तो मन को ये हर्षाते हैं सारे
मगर सच्चे लगते हैं..
ये वादें , ये जीवन ,
ये मौसम ,और अफसानें
बड़े अच्छे लगते हैं.....

एक एक करके याद करो तो है
बहुत अफसानें
वैज्ञानिकों ने अविष्कार करके
परचम है लहराया
मगर अच्छे लगते हैं ....
ये अविष्कार , ये गौरव ,
ये आधुनिकता , और बढ़ाएगें
बड़े अच्छे लगते हैं.....

कुछ खट्टी तो कुछ मीठे पल हैं
इसमें संजोए
बेटियों के लिए थोड़ी उदासीनता दिखलाई
मगर भरोसा है.....
ये सुरक्षा , ये सच्चाई ,
ये हौसला , और दिखलाएगें
बड़े अच्छे लगते हैं.....

नया सीखेगें हम यूं ही
चलते जाएंगे
भेद भाव को दूर कर यही ही सोच बढ़ाएगें
मगर उम्मींद है.....
ये सोच , ये दिशा ,
ये मानसिकता ,और बदलेगें
बड़े अच्छे लगते हैं.....
2024 के साल में राजनीति गरमाएगी
एक एक करके पाटा
आपस में धमाल मचाएंगी
मगर खासे लगते हैं.....
ये नारे , ये हुनरें ,
ये बहसबाजी , ये खबरें
बड़े अच्छे लगते हैं.....

डा.योगिता सिंहङ 'हंसा'

प्रेम प्रतीक्षा

वर्षों की प्रेम प्रतीक्षा का,
तुम देना यह उपहार प्रिये!
जब संगम की वेला आए,
करना मुझको स्वीकार प्रिये!
मेरा तप कठिन उर्मिला सा,
लक्ष्मण से तुम हो व्रती प्रिये!
संघर्ष हमारा चिरकालिक,
है कठिन हमारी नियति प्रिये!
फिर भी जब सुख के क्षण आएं,
तुम करना अंगीकार प्रिये!
स्वप्नों की स्वर्णिम शैय्या पर,
तुम करना मृदुल विहार प्रिये!
वर्षों की प्रेम प्रतीक्षा का,
तुम देना यह उपहार प्रिये!
जब संगम की वेला आए,
करना मुझको स्वीकार प्रिये!

सौम्या शर्मा

हे राम,,,,,,,,,सहारा तेरा है।

है राम ,,,,,,,,,,,सहारा तेरा है।
है श्याम,,,,,,, सहारा तेरा है।
मेरा तेरे सिवा प्रभु अब नही।
घनश्याम ,,,,,,,,सहारा तेरा है।

नैया के खेवनहार,,,,,,तुम्ही,
शबरी के पालनहार,,,,तुम्ही,
दो दर्श,,,,,,,,,सहारा तेरा है।
हे राम,,,,,,,,,,सहारा तेरा है।

मन मिलने को आतुर स्वामी,
मैं भजन गाऊं दो सुर स्वामी,
दो हर्ष ,,,,,,,,,,,सहारा तेरा है।
हे राम,, ,,,,,,,,,सहारा तेरा है।

कुछ परमारथ करती जाऊं,
दुखियों के दुख हरती जाऊं,
नाम का सहारा,,,,, ,तेरा है।
हे राम,,,,,,, , सहारा तेरा है।

जिसने भी राम ,,,,उचारा है,
उसको मिल गया किनारा है,
सरिता को सहारा,,,, तेरा है।
घनश्याम सहारा ,,,,,,,तेरा है।

सुनीता गुप्ता सरिता

सबको गले लगायेंगे

धर्म जाति का बंधन त्यागो,
सबको गले लगायेंगे।
करो जगत की सेवा प्राणी,
अहो भाग्य खुल जायेंगे।।

काल चक्र कब रुकता बोलो,
फिसल रेत सा यूँ जाए।
बने कर्म ही तेरी पूंजी,
मात्र यही हित में आए।।
विश्व बंधु बन कर अब साथी,
अद्भुत धरा सजायेंगे।
करो जगत की सेवा प्राणी,
अहो भाग्य खुल जायेंगे।
धर्म जाति का बंधन त्यागो,
सबको गले लगायेंगे।।

झूठ कपट छल से हो दूरी,
भाव सौम्यता बोली में।
सजती भिन्न-भिन्न फूलों से ,
सतरंगी रंगोली में।।
गगन तले मिलकर सब आओ ,
प्रेम ध्वजा फहरायेंगे।
करो जगत की सेवा प्राणी,
अहो भाग्य खुल जायेंगे।।
धर्म जाति का बंधन त्यागो,
सबको गले लगायेंगे।।

दिशा भ्रमित यह दुनिया सारी,
इधर-उधर भटके मारी।
उचित राह पहचाने कैसे ,
कमी ज्ञान की है भारी।।
पकड़ उंगली अब लोगों की ,
लक्ष्य ओर पहुँचायेंगे।
करो जगत की सेवा प्राणी,
अहो भाग्य खुल जायेंगे।।
धर्म जाति का बंधन त्यागो,
सबको गले लगायेंगे।

सघन तमस है मन अवसादी,
शक्ति ह्रास हो जाता है।
अंतर्मन डूब निराशा में,
आशा को विसराता है।।
रवि बन दुनिया का अँधियारा,
निश्चित हमीं मिटायेंगे।
करो जगत की सेवा प्राणी,
अहो भाग्य खुल जायेंगे।।

सीमा वर्णिका

रावण

युग परिवर्तन होता आया,
पर ना बदला रावण का रूप।
कर के सीता का हरण,
उत्पन्न किए उसने करोड़ों रूप।
आधुनिक युग के मानव ने भी,
रावण का रूप धरा है।
ना जाने कितनी ही,
सीताओं का हरण किया है।
रावण ने तो सीता का,
केवल हरण किया था।
स्त्रित्व पर उनके कभी पर,
आंच न आने दिया था।
परंतु...
आजकल का रावण,
पुरुषत्व दिखाना चाहता है।
नारी को कमज़ोर समझ,
मर्यादा भंग करना चाहता है।
हे नारी! कब तक तुम,
यूं सीता बनती जाओगी?
रावण रूपी पुरुष की तुम
यूं बलि चढ़ती जाओगी।
अब ना सहना तुम,
सीता ने थे जो-जो दर्द सहे।
कभी पिया से बिछोह हुआ,
तो कभी लगाया गया आक्षेप।
सीता बन कर अब तुम और,
अग्नि परीक्षा ना देना।
गर रावण नज़दीक में पाना,
उसका मर्दन कर देना।

श्रद्धा श्रीवास्तव

राम सहारा जन जन का

राम सहारा जन-जन का ,
दीन हीन पातक गण का।
आए शरण में जो प्राणी ,
उद्धार किया उस जीवन का।
वन वन डोले कष्ट सहे,
मां सीता संग राम रहे।
बीहड़ बन में शोभा श्री
जैसे संग रति के काम रहे।
साधक सम जीवन बीता,
वंदन दशरथ नन्दन का
राम सहारा जन जन का,
दीन हीन पातक गणका ।
निर्बल के बलराम प्रभु ,
दुखियों के सुख धाम प्रभु।
हनुमान विभीषण और सुग्रीव,
हृदय बसे श्री राम प्रभु।
शिव शक्ति का रूप अनूप
धन्य धन्य प्राणी बन का।
राम सहारा जन जन का,।
दीन हीन पातक गण का।।
शबरी, केवट, बड़भागी ,
नार अहिल्या भी तारी।
सबकी नैया पार लगाएं,
असुर निकंदन धनुधारी।
राम संस्कृति के नायक ,
सत्य धर्म सनातन का।
राम सहारा जन जन का।
दीन हीन पातक गण का।।

डॉक्टर पूनम चौहान
बिजनौर उत्तर प्रदेश

हमारा गणतंत्र

मास जनवरी दिन छब्बीस
सन उन्नीस सौ पचास में
गणतंत्र का हुआ स्वागत
सारे हिन्दुतान में
राजनीति में शामिल कर
मान दिया हर वासी को
नेता चुनने का अधिकार
दिया गया संविधान में
मूलभूत अधिकारों और
आरक्षण का प्रावधान कर
ऊँचे नीचे तबको का हित
रखा गया ध्यान में
राजतंत्र और जमींदारी से
मुक्त हुए भारतवासी
जाग उठा इक नया हौंसला
बूढ़े और जवान में
लालकिले पे जब सेना
अपना जौहर दिखलाती है
देख धड़कनें बढ़ जाती हैं
चीन-पाकिस्तान में
गणतंत्र दिवस के सुअवसर
पर नमन करें उन वीरों को
शीश झुकाती भारत माँ
'अंजू' जिनके सम्मान में
मास जनवरी दिन छब्बीस
सन उन्नीस सौ पचास में
गणतंत्र का हुआ स्वागत
सारे हिन्दुतान में

अंजलि गोयल अंजू
किरतपुर, बिजनौर
उत्तर प्रदेश

वीर शहीद

दिन है शहीदों को याद करने
का तिरंगा फहराने का ।
जाने कितने स्वतंत्रता
सेनानियों की जान गवांने का ।।
श्रद्धा सुमन अर्पित मेरे
देश के सभी वीरों को ।
उद्देश्य था इंकलाब जिंदाबाद
के लिए मिट जाने का ।।
स्वर्णिम इतिहास रच दिया
जो भारत मां के लिए ।
गणतंत्र दिवस दिवस का
पावन अवसर दिया मनाने का ।।
जय हिंद जय हिंद वीर
शहीदों की कुर्बानियों को ।
तूफान गुलामी के , साहस व
पराक्रम था आजादी पाने का ।।
आजादी के नव उद्घोष का
परचम लहराया था हर तरफ ।
समय था ऊँच-नीच भेद-भाव
मिटाकर अखंडता का पाठ पढ़ाने का ।।
अमर ज्योति स्मारक पहचान
है बलिदान के परवानों का ।
नहीं भूलना ये दिन बलिदानों
को याद करने-कराने का ।।
नये विचारों व संकल्पों के साथ
आजादी का अमृत महोत्सव ।
दिया अवसर देशवासियों को
हर घर तिरंगा फहराने का ।।

कविता नामदेव
नजीबाबाद बिजनौर (उ.प्र)

कृष्ण शिला से

कृष्ण शिला से
रामलला की मूरत बनकर आई है।
कितना अद्भुत रूप धरा है,
अनुपम सुंदरताई है।
सबसे ऊपर सूर्य देव हैं,
नीचे हनुमत और गरुण,
ओम स्वास्तिक शंख चक्र भी,
सुन्दर सा है रूप सगुण,
और गले में किञ्जलकिनी की
माला भी पहनाई है।
कितना अद्भुत.....
दशावतारों के दर्शन भी
साथ साथ हो जाएंगे,
बाल रूप में राघव के जब,
दर्शन करने जाएंगे,
भूत भविष्य एक साथ है,
यह कितना सुखदाई है।
कितना अद्भुत....
धनुष बाण सोने का धारे,
रघुकुल दीपक मुस्काते,
दीन दुखी या धनी भक्त हो,
मन से सबको अपनाते।
बाल सुलभ चञ्चलता मुख पर
आँखों में करुणाई है।
कितना अद्भुत.....

ऋतुबाला रस्तोगी

शहर समता के संस्थापक स्व. कन्हैया लाल की पुण्यतिथि पर नमन

पिता के बल से, मिलता है
बलाबल,
पिता होता है आकाश।

जन्म - जन्माष्टमी 1922
महाप्रस्थान - 24 फरवरी 2004

पुत्र - उमेश श्रीवास्तव, पौत्र - अनंत श्रीवास्तव, केशव श्रीवास्तव
पुत्रियाँ - राज कुमारी, शील कुमारी, कुसुम, गीता, गायत्री, उमा, रमा

तथा समस्त शहर समता परिवार
प्रयागराज - 211002